इकाई 14 किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए लेखन

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए लेखन का अभिप्राय

14.3 इन वर्गों के लिए लेखन का महत्व

14.4 सामाजिक पृष्ठभूमि

14.5 किशोरों, युवाओं और बुजुर्गों के संबंध में लेखन के विभिन्न क्षेत्र

- 14.5.1 टेक्नोलॉजी और भारतीय किशोर
- 14.5.2 बदलते समाज में युवा
- 14.5.3 अकेले होते बुजुर्ग

14.6 विषय पर लेखन के प्रकार

- 14.6.1 संवादहीनता
- 14.6.2 विघटन
- 14.6.3 अकेलापन
- 14.6.4 अपराध
- 14.6.5 रिश्तों में तनाव
- 14.6.6 परिवर्तन

14.7 लिखने के लिए आवश्यक योग्यता

14.8 विषय का चयन

- 14.8.1 रुचि और विशेषज्ञता
- 14.8.2 लेखन का उद्देश्य और प्रासंगिकता
- 14.8.3 प्रकाशन की प्रकृति

14.9 सामग्री का संकलन

- 14.9.1 विषय पर शोध
- 14.9.2 तथ्यों का संकलन
- 14.9.3 साक्षात्कार
- 14.9.4 फोटो तथा अन्य सामग्री

14.10 सामग्री का संयोजन और संपादन

14.11 फीचर लेखन

- 14.11.1 आरंभ
- 14.11.2 मध्य
- 14.11.3 अंत और शीर्षक

14.12 भाषा–शैली

14.13 सारांश

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

14.14 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

यह इस खण्ड की तीसरी इकाई है। इसमें आप किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए लिखे जाने वाले फीचर के बारे में व्यावहारिक ज्ञान हासिल कर सकेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के बारे में लिखे जाने वाले फीचर की विषयवस्तु और सामाजिक पृष्ठभूमि की समझ हासिल कर सकेंगी/सकेंगे;
- इन तीनों विशिष्ट वर्गों के लिए फीचर लेखन की जरूरतों को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- यह जान सकेंगी/सकेंगे कि किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए किन क्षेत्रों में फीचर लेखन किया जा सकता है;
- फीचर लेखन के लिए विषय के चयन तथा उसके लिए आवश्यक तैयारी के बारे में व्यावहारिक ज्ञान हासिल कर सकेंगी/सकेंगे; तथा
- फीचर के आरंभ, मध्य और अंत की तकनीकी जानकारी तथा इस तरह के फीचर में इस्तेमाल होने वाली भाषा–शैली की जानकारी हासिल करते हुए इन विषयों पर फीचर लेखन की क्षमता का विकास कर सकेंगी/सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

यह समाचार पत्रों के लिए फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम की 14वीं इकाई है। इस इकाई में हम आपको समाज के विशिष्ट वर्ग किशोर, युवा और बुजुर्गों के बारे में लिखे जाने वाले फीचर के बारे में जानकारी देंगे। इसमें हम आपको बताएंगे कि बदलते समय के साथ इन तीनों वर्गों की सामाजिक भूमिका में किस तरह बदलाव आया है, जिसका लेखक को ध्यान रखना चाहिए। इसकी समझ विकसित करने पर ही अच्छे फीचर की विषय वस्तु तैयार हो सकती है। इसलिए हम विस्तार से तीनों वर्गों की सामाजिक पृष्ठभूमि और भारत के आर्थिक–सामाजिक परिदृश्य में आए बदलावों के संदर्भ में इनकी पड़ताल कर सकेंगे। हम यह भी देखेंगे कि वो कौन से प्रमुख मुद्दे हैं, जिनके आधार पर फीचर तैयार करने के लिए दिशा–संकेत मिल सकते हैं। इस तरह के फीचर में प्रयोग होने वाली भाषा–शैली और उसकी बनावट पर अलग से विचार किया जाएगा। इससे आपको इन वर्गों पर लिखे जाने वाले फीचर की प्रस्तुति को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

14.2 किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए लेखन का अभिप्राय

उत्तर औपनिवेशिक भारतीय समाज के बीते 15–20 सालों में तेजी से बदलाव आया है। एक सामाजिक इकाई के रूप में परिवार का स्वरूप भी इन वर्षों में काफी परिवर्तित हुआ है। उदारीकरण के बाद आर्थिक परिदृश्य ने परिवार के भीतर आए इस बदलाव में बड़ी भूमिका निभाई है। पवन कुमार वर्मा अपनी किताब 'द ग्रेट इंडियन मिडिल क्लास' में इसी परिवर्तन की पड़ताल करते हुए लिखते हैं –

''उपग्रहीय टी.वी. के विस्फोट ने घर–घर उपभोक्तावाद का संदेश जिस दक्षता और प्रभावोत्पादकता से पहुंचाया उसकी कुछ वर्षों पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इस क्रांति का आगाज 1991 में हुआ था। 1995 तक अनुमानतः करीब एक करोड़ 80 लाख घरों के तार केबल अथवा उपग्रहीय टी.वी से जुड़ चुके थे। बहुत से मध्यवर्गीय परिवारों ने दूरदर्शन की ***इजारेदारी फलांगते*** *हुए पाया कि अब उनके पास देखने को पचास से भी ज्यादा चैनल हैं। हर चैनल का आधार अनिवार्यतः विज्ञापन ही था''*

देखते–देखते परिवार की विभिन्न इकाइयों की भूमिका में काफी परिवर्तन आ गया। खासतौर पर किशोरों, युवाओं और बुजुर्ग वर्ग की स्थिति बदली। गौर करने लायक बात यह है कि अब तक घर का प्रौढ़ सदस्य ही परिवार और समाज की एक आर्थिक इकाई के बतौर देखा जाता था, लिहाजा उसके इर्द–गिर्द ही लेखन और उससे जुड़ी विषय वस्तु का ताना–बाना बुना जाता था। अब युवाओं, किशोरों और बुजुर्ग वर्ग की अपनी निजी स्वायत्तता सामने आने लगी है, उनकी दिक्कतों, जरूरतों और बदली भूमिका को सामने लाने में इस दौर की पत्रकारिता ने अहम भूमिका निभाई है। उन पर फोकस करके खास तरह के लेख लिखे जा रहे हैं। वहीं पूरे परिवार के लिए 'धर्मयुग' या 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' जैसी एक ही पत्रिका की अवधारणा लगभग खत्म हो गई। संदेह नहीं कि इन व्यापक परिवर्तनों ने पत्रकारिता और लेखन पर भी असर डाला है। इसका असर इन दिनों की पत्रकारिता में विषय के चयन, प्रस्तुति और शैली पर साफ देखा जा सकता है।

14.3 इन वर्गों के लिए लेखन का महत्व

किसी भी देश में किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग की स्थिति यह साफ करती है कि हमने दरअसल कैसा समाज तैयार किया है। युवाओं और किशोरों से भावी समाज तैयार होता है और बुजुर्गों से उसे स्थायित्व मिलता है। देखें तो उदारीकरण के बाद भारत में पीढ़ियों के बीच खाई और चौड़ी हुई है। जहां एक तरफ युवाओं और बुजुर्गों की समस्याएं बढ़ी हैं, वहीं समाज में उनके लिए व्यापक जगह भी बनी है। ये दोनों पहलू इस दौर में फीचर लेखन का व्यापक संदर्भ तैयार करते हैं। जहां कैरियर के प्रति चिंता, जीवन के प्रति उन्मुक्त नजरिया, उपभोक्तावादी रुझान और सेक्स के प्रति खुलापन आज के युवा और किशोर वर्ग की हकीकत बनती जा रही है, वहीं बुजुर्गों को बढ़ती असुरक्षा, अकेलेपन और उपेक्षा का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय मध्यवर्ग में संयुक्त परिवार खत्म होते जा रहे हैं, लिहाजा, अकेला होना इस समाज के बुजुर्गों की नियति बनती जा रही है। युवाओं और बुजुर्गों के बीच संवाद अब लगभग खत्म हो चुका है। हालात कुछ इस तरह हैं जैसे कि एक ही भारतीय समाज में दो भिन्न युगों के लोग रहते हैं। इन बदली परिस्थितियों के बीच लेखन की अपार संभावनाएं हैं।

14.4 सामाजिक पृष्ठभूमि

भारतीय समाज शुरू से ही परंपरागत मूल्यों से जुड़ा रहा है। ये परंपराएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचारित होती जाती थीं। आधुनिक भारतीय समाज में इस तरह की श्रृंखला टूटने लगी। नतीजा यह हुआ कि पारंपरिक मूल्यों का ह्रास हुआ, मगर उनकी जगह नए मूल्य स्थापित नहीं हुए। पश्चिमी जीवन शैली का तेजी से अनुकरण हुआ

लेकिन आधुनिक जीवन मूल्यों से भारतीय समाज अनभिज्ञ रहा। इसकी वजह से युवाओं में एक किस्म का बिखराव देखने को मिलता है। इतने बड़े प्रजातांत्रिक देश में युवाओं की राजनीतिक चेतना बहुत ही अपरिपक्व है। वहीं उपभोक्तावाद का असर किशोरों और युवाओं पर पड़ा है। किशोरों में कैरियर के प्रति स्पष्ट नजरिया और अधिक पैसा कमाने की होड़ भी दिखने लगी है। परंपरागत समाज के तौर–तरीके खत्म होने के साथ स्त्री–पुरुष के बीच दूरी घटी और यौन स्वतंत्रता बढ़ी है। प्रेम की परिभाषा बदली है। आज का युवा जीवन को ज्यादा व्यावहारिक होकर जीने में यकीन रखता है। इसके सकारात्मक पहलू भी सामने आए लेकिन इसके चलते भारतीय समाज में एक बड़ा संकट भी पैदा होने लगा। मानसिक रूप से परंपरागत समाज से जुड़ा मध्यवर्गीय युवा एक दोहरी मानसिकता में जी रहा है।

दूसरी ओर, बुजुर्गों की तरफ देखने से लगता है कि वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र और मजबूत तो हुए, मगर सामाजिक रूप से लगातार कमजोर पड़ते जा रहे हैं। जिस सामाजिक व्यवस्था में वे खुद को सुरक्षित महसूस करते थे, वह अब छिन्न–भिन्न होती जा रही है। संपत्ति के लालच में उन पर हमले बढ़े हैं तो महानगरों में बच्चों से दूर अकेले रहने वाले बुजुर्गों का जीवन असुरक्षित होता जा रहा है। कभी जीवन के अंतिम समय में एक भरे–पूरे परिवार का मुखिया बनने वाला भारतीय आज जीवन संध्या में अकेला, उदास और असुरक्षित है। ऐसे में एक बेहतर फीचर लेखक को इन संकटों की पहचान कराने वाला बनकर भी सामने आना चाहिए। इन विषयों पर लिखे जा रहे फीचर की यह अनिवार्य शर्त होनी चाहिए कि वह बदलाव के मद्देनजर उसके अच्छे–बुरे पहलुओं को लोगों के सामने उजागर कर सके। समाज में इन मुद्दों पर व्यापक बहस चलाने में और दृष्टिकोण विकसित करने में अखबार के ये मौलिक फीचर एक बड़ी भूमिका निभाते हैं।

14.5 किशोरों, युवाओं और बुजुर्गों के संबंध में लेखन के विभिन्न क्षेत्र

किसी भी लेखक के लिए इन विशिष्ट वर्गों के लिए लेखन में अपार विषय विस्तार है। यहां हम यह देखेंगे कि वो कौन से अहम पहलू हैं जिनकी तरफ निगाह डालने से बेहतर फीचर लेखन में मदद कर सकती हैं।

14.5.1 टेक्नोलॉजी और भारतीय किशोर

बदलती टेक्नोलॉजी ने किशोरों के जीवन पर व्यापक प्रभाव डाला है। सेटेलाइट चैनलों की इसमें सबसे अहम भूमिका है। विज्ञापन, टी.वी सीरियल और फिल्में उनकी जीवन शैली में उपभोक्तावाद के दखल का प्रमुख औजार रहे हैं। ग्लोबलाइजेशन के दौर में नौकरियों के बढ़ते अवसर, पश्चिमी जीवन शैली के तेजी से प्रसार, इंटरनेट के बढ़ते इस्तेमाल और शिक्षा के क्षेत्र में उदारीकरण ने भी उन पर काफी असर डाला है। इसका सीधा असर हम उनकी जीवन शैली पर देख सकते हैं। खास बात यह है कि समाज के इस वर्ग के लिए नई टेक्नोलॉजी कोई अजूबा चीज नहीं है। परंपरागत शिक्षा की बजाय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन के पाठ्यक्रमों पर ज्यादा जोर है। आई. टी. और मैनेजमेंट के इन संस्थानों ने एक नए किस्म की संस्कृति को विकसित किया है।

तस्वीर का एक बिल्कुल उलट पहलू यह है कि उदारीकरण के बाद सामाजिक असमानता भी तेजी से बढ़ी है। जहाँ मध्यवर्ग और उच्च मध्यवर्ग के किशोरों की जीवन शैली में तेजी से बदलाव देखा जा सकता है वहीं निम्न मध्यवर्गीय जीवन जीने वाले परिवारों के किशोर शोषण और अपराधीकरण का शिकार हो रहे हैं। बढ़ती असमानता उनमें हताशा और कुंठा पैदा कर रही है। यही वजह है कि अपराध की घटनाओं में किशोरों की भागीदारी बढ़ी है। परंपरागत मूल्यों का ह्रास होने की वजह से सभी तबकों में किशोर–किशोरियों का सामाजिक शोषण भी बढ़ा है। यौन शोषण की घटनाओं में बीते सालों में तेजी से इजाफा हुआ है।

14.5.2 बदलते समाज में युवा

इसी तरह से युवाओं की प्राथमिकताओं में आए बदलाव, कैरियर के प्रति रुझान, उनकी राजनीतिक सक्रियता, पीढ़ियों के बीच बढ़ती खाई, युवाओं में आई यौन स्वतंत्रता, उससे उपजे विरोधाभास और द्वंद्व फीचर का विषय बन सकते हैं। 'इंडिया टुडे' अपने 20 अगस्त 2003 के अंक में इसी बदलाव को इंगित करते हुए लिखता है–

''मादक सौंदर्य की मल्लिका सुष्मिता सेन और नैसर्गिक सौंदर्य का एहसास कराती ऐश्वर्या राय ने जो शुरुआत की, उससे ऐसा लगा मानो भारत ने सुंदरता के अंतरर्राष्ट्रीय ताजों का पेटेंट हासिल कर लिया हो। समूचे भारत में चाहे छोटे शहर हों या महानगर, आंखों में एक सपना पाले अभिभावक सौंदर्य निखारने वाली संस्थाओं के सहयोग से अगली विश्व सुंदरी तैयार करने के काम में जिद और जुनून से जुटे हुए हैं।''

(इंडिया टुडे, 20 अगस्त 2003)

भारतीय समाज में युवा की राजनीतिक सक्रियता हाल–फिलहाल तक वैसी नहीं रह गई जैसी की साठ और सत्तर के दशक में थी। उनकी प्राथमिकताओं में कैरियर सबसे अहम है। हाल के वर्षों में स्त्री सशक्तीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई है। इसका युवाओं की सोच और उनकी जीवन–शैली पर खासा असर पड़ा है। युवाओं के आपसी संबंधों, विवाह और प्रेम की अवधारणा में पहले से बहुत फर्क आया है। प्रेम अब भावुक न होकर ज्यादा व्यावहारिक फैसले में बदलता जा रहा है। मध्य और उच्च मध्यवर्गीय युवाओं में प्रेम के लिए खुद को मिटाने जैसी आत्मघाती प्रवृत्ति में कमी आई है और कैरियर को भावनात्मक संबंधों पर तरजीह मिल रही है। युवाओं के बीच यौन संबंधों को सामाजिक स्वीकृति तो नहीं मिली है, मगर वे वर्जनाओं से मुक्त भी होते जा रहे हैं। इन्हीं वर्षों में युवाओं के बीच वैवाहिक संबंधों में बिखराव भी देखने को मिल रहा है। तलाक की घटनाएं और विवाहेत्तर संबंध भी बढ़े हैं। कुल मिलाकर यह भारत में बहुत तेजी से चल रहे सामाजिक परिवर्तन का दौर है, जहां बेहतर लेखन के लिए खुदका नजरिया भी बहुत साफ और विश्लेषणात्मक रखना होगा।

14.5.3 अकेले होते बुजुर्ग

भारतीय बुजुर्गों के लिए यह दौर अकेलेपन का है। समाज में अनुभव से प्राप्त ज्ञान के पीढ़ी–दर–पीढ़ी संचार की प्रक्रिया लगभग खत्म हो गई है, जिसका नतीजा यह हुआ कि बुजुर्ग सहसा अप्रासंगिक हो गए हैं। नई पीढ़ी समझती है कि इस दौर के लिए उनके जीवन अनुभवों का कोई मूल्य नहीं है। शहर और गांव दोनों ही जगह वे अकेले और उपेक्षित होते जा रहे हैं। इस दौर में कैरियर के चलते बेटे–बेटियों से दूर होने

की विवशता भी उनके साथ है। वे इस समाज में असुरक्षित भी हुए हैं। असामाजिक तत्वों का वे आसान शिकार हैं। आने वाले दिनों में यह संकट और बढ़ने वाला है। ऐसा नहीं है कि बुजुर्गों के लिए बदला हुआ दौर सिर्फ निराशा लेकर आया हो। उनकी समस्याएं बढ़ी हैं तो अब उन पर पहले से ज्यादा फोकस भी हो रहा है। कई स्वयंसेवी संगठन उनकी मदद को आगे आ रहे हैं। वे आर्थिक रूप से पहले से ज्यादा सबल हुए हैं। बच्चों के बेहतर कैरियर और भविष्य के प्रति सुनियोजित रणनीति बनाने की वजह से वे जीवन की अंतिम बेला में ज्यादा सुखी और संतुष्ट है। बेटियों को मिली स्वतंत्रता, शिक्षा और बेहतर कैरियर ने बुढ़ापे में सिर्फ बेटों पर निर्भरता को खत्म किया है।

14.6 विषय पर लेखन के प्रकार

इन वर्गों पर फीचर लिखने के लिए विषय के विस्तार की संभावनाओं को भी टटोलना होगा। इन्हें सीधे–सीधे किसी खांचे में नहीं बांटा जा सकता क्योंकि तेजी से आ रहे सामाजिक बदलाव के मद्देनजर इसमें हमेशा असीमित संभावनाएं बनी रहेंगी। यहां हम सुझाव के तौर पर कुछ प्रमुख मुद्दों को प्रस्तुत कर रहे हैं, जो तीनों वर्गों में सामान्य तौर पर उठते रहते हैं और जिन्हें हम फीचर का विषय बना सकते हैं।

14.6.1 संवादहीनता

यह इस दौर की सबसे बड़ी समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है। किशोर युवा और बुजुर्ग संवादहीनता की स्थिति से गुजर रहे हैं। समाज की प्रमुख आर्थिक इकाई यानी उसके प्रौढ़ सदस्य से उनका संवाद लगभग खत्म हो चुका है। बुजुर्गों का संतानों से या तो नाता टूट गया है या उनके बीच अदृश्य दूरी खिंच गई है। यही स्थिति किशोरों और युवाओं की अपने अभिभावकों के साथ है। अब ऐसे मौके भी खत्म होते जा रहे हैं जो सामाजिक स्तर पर संवाद स्थापित करते थे। यदि हैं भी तो उनमें आडंबर ही शेष रह गया है।

14.6.2 विघटन

इस दौर में विघटन कई स्तर पर है। एक सामाजिक इकाई के बतौर किशोर, युवा और बुजुर्ग विघटन के शिकार तो हैं ही, वे वैयक्तिक विघटन का भी शिकार हो रहे हैं। यही वजह है कि इस दौर में हिंसक और आत्मघाती प्रवृतियां बढ़ी हैं। किशोरों और युवाओं के साथ बुजुर्गों में भी आत्महत्या के मामले सामने आने लगे हैं। ज्यादातर फीचर लेखक इन पर लिखते वक्त घटनाओं या आंकड़ों का ब्योरा तो देते हैं मगर इनके कारणों का विश्लेषण करने से बचते हैं। देखा जाए तो उन वजहों को उद्घाटित करना आज के दौर में फीचर लेखक के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

14.6.3 अकेलापन

यह भी दरअसल संवादहीनता से ही उपजी स्थिति है। अब तक शहरों में रहने वाले युवा–किशोर और बुजुर्ग अकेलेपन का शिकार थे, अब गांवों में रहने वाले भी एक दूसरे अर्थों में अकेले होते जा रहे हैं। वे तेजी से बदल रहे समाज और टैक्नोलॉजी से अपना तालमेल नहीं बैठा पाने की वजह से पीछे छूटते जा रहे हैं। दरअसल यहां हम जिन संदर्भो में अकेलेपन का जिक्र कर रहे हैं, वे निजी अकेलापन न होकर सामाजिक अकेलापन है, जो अलग–थलग कर दिए जाने से पैदा हुआ है।

14.6.4 अपराध

इस दौर में अपराध बढ़े हैं। किशोरों के खिलाफ अपराध हो रहे हैं साथ ही उनकी खुद की भागीदारी भी अपराध में बढ़ रही है। समाज के भीतर भी अपराध बढ़े हैं, बलात्कार, लूट की घटनाओं से अब अपने आसपास के समाज में रहने वालों की शिरकत का भी पता चलता है।

14.6.5 रिश्तों में तनाव

रिश्ते अब पहले जैसे सहज नहीं रह गए हैं। रिश्तों में आए तनाव की तमाम वजहें हो सकती हैं, मगर तनाव अब सतह पर दिखने लगा है। बुजुर्गों की नई पीढ़ी से असहमतियां तो पहले से थीं, और देखें तो इस मामले में आज के बुजुर्ग आत्म–समर्पण की स्थिति में पहुंच गए हैं, मगर उनके बीच आपस में ही असहमतियों के स्वर उभरने लगे हैं। वहीं युवा दंपतियों के बीच तनाव अब आम होने लगा है। सहनशीलता घटी है और तलाक की घटनाएं तेजी से सामने आ रही हैं। विवाहेत्तर संबंध, युवाओं में यौन संबंधी वर्जनाओं का खत्म होना भी रिश्तों में तनाव को जन्म दे रहा है।

14.6.6 परिवर्तन

आज के दौर में परिवर्तन की रफ्तार इतनी तेज हो गई है कि जब तक लोग एक बदलाव के मुताबिक खुद को ढालते हैं, नया परिवर्तन हो जाता है। भारतीय समाज अपेक्षाकृत एक ठहरा हुआ समाज है, जहां इतनी तेजी से आने वाले बदलाव एक मुश्किल समीकरण बनाते हैं। यह राजनीतिक हो सकता है, शिक्षा की नीति में आने वाला बदलाव हो सकता है और टेक्नोलॉजी में भी। तेजी से आने वाले उतार–चढ़ाव जॉब मार्केट यानी नौकरी के बाजार भी हो सकते हैं और फैशन के भी। इस तरह के परिवर्तन और उनसे उपजे संकट भी फीचर का विषय बन सकते हैं। 'आउटलुक' अपने 25 फरवरी 2004 के अंक में लिखता है –

''भारत में वैलेंटाइंस डे का यह बुखार पिछले एक दशक के दौरान चढ़ा है। महानगरों में ही नहीं, छोटे–छोटे कस्बों में भी नए वर्ष के समारोहों के गुजरने के बाद युवक–युवतियां वैलेंटाइंस डे का बेसब्री से इंतजार करते हैं। प्रेम की मार्केटिंग करने के लिए एक पूरा नया उद्योग खड़ा हो गया है। एक अखबार ने इसे सुपर स्टोरों और प्रेम का भव्य और विस्तृत प्रदर्शन करार दिया है।''

प्रेम गली न रही सांकरी (गीताश्री, आउटलुक, 25 फरवरी 2004)

14.7 लिखने के लिए आवश्यक योग्यता

इन विशिष्ट वर्गों पर लेखन के लिए किसी अतिरिक्त योग्यता की जरूरत नहीं है, मगर लिखने वाले में समाज में बहुत सूक्ष्म स्तर पर होने वाले बदलावों को भी पकड़ने की क्षमता होनी चाहिए। गौर करें तो मीडिया ने भी अपनी खबरों की प्राथमिकताएं बदली हैं। अब हादसे, राजनीति और अपराध के अलावा रहन–सहन और समाज में आ रहे बदलाव भी रोजमर्रा की खबरों का एक बड़ा हिस्सा होते हैं। दिक्कत सिर्फ इतनी है कि इन खबरों की यथावत प्रस्तुति के पीछे कोई दृष्टिकोण या नजरिया नहीं होता। अक्सर इन खबरों को बिकाऊ या सनसनीखेज बनाने पर जोर रहता है।

इसकी वजह से कई बार सामाजिक हलचलों की सुर्खियां नकारात्मक मूल्यों को ही प्रश्रय देने लगती हैं। ऐसी स्थिति में इन विषयों पर फीचर लिखने वाले की अहमियत और उसकी खुद की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

तेजी से बदलती प्रवृतियों और परिवर्तन के प्रति तटस्थ और विश्लेषणात्मक नजरिया भी विकसित करना जरूरी है। लेखक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने आसपास के सामाजिक परिवेश को महज दर्शक की तरह नहीं देखे, बल्कि प्रत्येक परिवर्तन या अप्रत्याशित सामाजिक घटनाओं की तह में जाने का प्रयास करे। उत्तर–औपनिवेशिक भारत की राजनीतिक–आर्थिक स्थितियों की समझ, विभिन्न संस्कृतियों और उनकी आपसी टकराहट की समझ और नई टेक्नोलॉजी और उसके समाज पर पड़ रहे प्रभाव के बारे में जानना भी जरूरी है। तभी हम उदारीकरण के बाद सामने आने वाले अपने ही आसपास के इन नए चेहरों की हकीकत और उनका दुख–दर्द समझ सकेंगे। यहां हम भारतीय युवाओं के एक अनछुए पहलू पर लिखे फीचर के कुछ हिस्से उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत कर रहे हैं। आप देखेंगे कि यह फीचर खासा मार्मिक होने के बावजूद विषय की गहराई और गंभीरता के प्रति तीखे तेवर वाला है –

''कंपनी बाग में देसी फूल''

उन्हें यहां देखकर अनायास पीटर्सबर्ग में पढ़ने वाले दोस्तोएवस्की के आत्मपीड़ा में डूबे छात्र याद आते हैं। प्रयाग में खड़े होकर पीटर्सबर्ग को याद करने की वजह कोई बौद्धिक चोंचलापन नहीं है, सीधी–सी बात यह है कि सड़कों पर और गलियों में सबसे अधिक वही दिखते हैं। फिर भी अपने साहित्य में वे कहीं नजर नहीं आते, यह हिन्दी के बाबू टाइप लेखकों का मोतियाबिंद है, उसकी वजह से दोस्तोएवस्की और चेखेव से उधार मांगकर काम चलाना पड़ता है। साहित्य ही क्यों, वे वर्षों से नाटकों, फिल्मों और अखबारों में भी नहीं नजर आते। .....

सोने से दिल और लोहे के हाथों वाले ये लड़के कभी–कभार फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में जुगनू की तरह चमक उठते हैं फिर अंधियारे में खो जाते हैं, बहुत ढूंढने पर एक काशीनाथ सिंह, जिन्होंने 'अपना मोर्चा' में जीवन के जरिए विश्वविद्यालय को लेकर एक फंतासी बयान दिया है। 'अपना मोर्चा' शायद हिंदी का अकेला दुबला–पतला उपन्यास है, जिसमें ऐसे छात्रों की कहानी कही गई है, जो जब एडमिशन लेने जाते थे। तो उनके बालों में भूसे के तिनके फंसे होते थे और घुटनों पर बैलों की दुलत्ती के निशान पाए जाते थे, जो सड़क पर गरजते बैलों को सोकना और धौरा कहकर पहचानते थे, जो घर से सतुआ, पिसान और गुड़ लाते थे और जिनकी जांघे लंगोट की काछ से बरसात के दिनों में कट जाया करती थीं।

उपन्यासों और कहानियों से बेदखल होकर वे कहीं गए नहीं, वे यहीं हैं, हमारे अगल–बगल और पड़ोस में। वे इन दिनों भी डिग्री वाले विश्वविद्यालय से लेकर जीवन के टेढ़े–मेढ़े गलियारों तक अपने अस्तित्व की पीड़ा भरी लड़ाई लड़ रहे हैं। हो यह रहा है कि बाजार, कंपनियां, विश्वविद्यालय, सरकार और मीडिया इन दिनों छात्रों की जो चिकनी–चिकनी प्यारी–प्यारी छवियां बेच रहे हैं, उनकी चकाचौंध में धूप से पक कर कांसा हुए चेहरों वाले ये लड़के कहीं किनारे भकुआए खड़े रह जाते हैं, उन पर किसी की नजर नहीं जाती।

उनसे मिलना है तो आजकल किसी दिन दुपहरिया में कंपनी बाग आइए, विक्टोरिया टावर के पास किसी झुरमुट में तीन छल्ले की झूलन सीट और चौड़े कैरियर की इक्का–दुक्का साइकिलें दिखेंगी। गियर वाली डिजाइन छरहरी साइकिलों के बीच वे चौड़ी हड्डियों वाले मजबूत देहाती की तरह लगती हैं। इन्हें वे गांव से अपने साथ लाए हैं। वे हर महीने गांव जाते हैं और अनाज बेचकर पढ़ाई का खर्चा लाते हैं। वे औने–पौने अनाज बेचने की तकलीफ जानते हैं, इसीलिए घरों से शहर लौटते हुए जेब भरी होने के बावजूद गुमसुम रहते हैं। वे हमारे गांवों के सबसे होनहार लोग हैं जो बहुत ही क्रूर और सघन सामाजिक चयन से गुजरकर यहां पहुंचते हैं। वे अपने घर और ससुराल की आशाओं के केन्द्र हैं। वे खिड़कियां हैं, जो स्वप्नों की आधुनिक दुनिया में खुलती हैं।इन्हीं सपनों में जूझते ढेर सारे गांव जीते हैं। वे यहां कंपनी बाग की मुलायम अभिजन दूब पर बैठकर ऊंचे रुतबे की नौकरियों के लिए हर साल होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। कलक्टर, कप्तान या मुंसिफ होना उनके लिए बहुत दूर का सपना है। इस सपने की बात छोड़िए, उसका पीछा करने में ही बड़ा थ्रिल है। वे इसी रोमांच में जीते हैं। कंपनी बाग के रूमानी झुरमुटों में किताबों के साथ होना भी उनके लिए बड़ी चीज है क्योंकि वे सस्ते किराये की जिन कोठरियों में रहते हैं, पकाते हैं, वहां हवा और रोशनी के आने की मनाही है। वहां काइयां और लोलुप मकान मालिकों की पाबंदियां और नखरे हैं। चालीस वाट से ज्यादा पॉवर का बल्ब जलाने पर कोई बल्ब फोड़ देता है तो कोई रात में पाखाने में ताला लगाकर सोता है। ये लड़के किरासिन तेल की तलाश में जेब में परिचय–पत्र और हाथ में कनस्तर लिए लाइनों में लगते हैं। खर्च चलाने के लिए ट्यूशन पढ़ाते हैं। सेकेंड हैंड किताबों और किलो के भाव से बिकने वाली कापियों को तलाशते हैं। शहर की इन अंधेरी कोठरियों और क्लास में टिके रहने की जद्दोजेहद ही इनमें से कइयों को इतना थका डालती है कि उनकी टहनियों पर कमीजें लटकती मिलती हैं।

किताबों के इर्द–गिर्द उन्हें देखकर यह नतीजा निकालना कतई गलत होगा कि ये लड़के बहुत मेधावी हैं और उन सबमें ज्ञान की अदम्य पिपासा है। इनमें से ज्यादातर के लिए शिक्षा हांसिए जैसा कोई औजार है, जिससे वे अपने भविष्य के रास्ते में उगे झाड़–झंखाड़ की निराई करते हैं। अगर उनकी मेधा जाननी है तो उन्हें लार्ड मैकाले के नहीं, किसी और पैमाने पर जांचिए। आप इनमें से किसी को अंग्रेजी में सोशियोलॉजी लिखने को कहें और वह 'सुशीला जी' लिख दे तो हंसिए मत, वे आपको आधुनिक वर्णाश्रम और जातिवाद की सामाजिक इंजीनियरी कई दिन तक लगातार पढ़ा सकते हैं क्योंकि इसे उन्होंने पढ़ा और सुना नहीं, भोगा और जिया है।

अभी–अभी ग्राम पंचायतों के चुनाव बीते हैं, उसमें वे गले–गले तक डूबे थे। जातिवादी राजनीति का एक–एक पेंच वे जानते हैं।

यथार्थ की इस समझदारी और समाज से उनके गहरे सरोकारों की वजह से ही वे हमेशा संघर्षों के बीच फंसे नजर आते हैं। याद कीजिए, आपने आखिरी बार जो छात्रों का जुलूस देखा था उसके सबसे अधिक चेहरे कैसे थे? यही हैं वे जो लाठी चार्ज के बाद अस्पतालों में और गिरफ्तारी के बाद जेलों में सबसे अधिक पाए जाते हैं। वे चुपचाप लड़ते हैं और इस संघर्ष का कोई प्रतिदान नहीं मांगते और न ही शहरी बाबुओं की तरह 'आई हेट पॉलिटिक्स' जैसे जुमले बोलकर नकली हंसी हंसते हैं।

उनके बारे में इतनी बातचीत का सबब, एक अध्यापक का वह बयान है जिसमें उन्होंने कहा है कि उच्च शिक्षा सरकार का संवैधानिक दायित्व नहीं है। इधर देश की सरकार

उस दुकानदार जैसा सलूक कर रही है, जो शिक्षा को उन्हीं लोगों के हाथों बेचना चाहता है, जो उसकी ज्यादा कीमत दे सकें।

इस कठिन समय में गांवों के ये लड़के कहां जाएंगे? क्योंकि उनके पास पैसा ही नहीं है, बाकी सब कुछ है। कोई ताज्जुब नहीं कि आने वाले दिनों में आपको विश्वविद्यालय परिसरों में ये लड़के न दिखाई पड़े। वे कंपनी बाग में खिले देसी फूल हैं। उन्हें जी भर के देख लीजिए, क्या पता कल रहें न रहें।''

अनिल यादव (अमर उजाला, 17 अगस्त 2000)

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) रोजमर्रा के जीवन में नई टेक्नोलॉजी का दखल होने और उदारीकरण से किशोरों के जीवन में क्या परिवर्तन आया है? उदाहरण सहित विवेचना करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) महानगरों में बुजुर्गों का जीवन क्यों असुरक्षा और अकेलेपन का शिकार होता जा रहा है? इस पर कारणों सहित एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) भारतीय समाज में युवाओं की मौजूदा स्थिति पर आप क्या सोचते हैं? संक्षिप्त टिप्पणी लिखें ।

.....

.....

.....

.....

14.8 विषय का चयन

किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए फीचर लिखते वक्त हमें ध्यान रखना होगा कि अन्य विषयों के मुकाबले यह विषय एक खास तरह की संवेदनशीलता की मांग करता है। जब तक आप किशोरों, बुजुर्गों और युवाओं की समस्याओं से गहराई से जाकर

नहीं जुड़ेंगे, इन पर अच्छा फीचर तैयार नहीं हो सकेगा। खास बात यह है कि इन तीनों वर्गों के 'सामाजिक मनोविज्ञान' को समझना खासा मुश्किल होता है। समाज का प्रत्येक परिवर्तन इनमें बहुत गहराई से बदलाव लाता है। लिहाजा लिखने वाले में इन बदलावों की तह तक जाने की दिलचस्पी होनी चाहिए। आगे हम विषय के चयन पर ही थोड़ा विस्तार से विचार करेंगे।

14.8.1 रुचि और विशेषज्ञता

इन वर्गों के लिए लेखन की शुरुआती शर्त ही विशेषज्ञता है क्योंकि ये फीचर अपनी प्रकृति में ही विशिष्ट हैं, लिहाजा आपको अपनी दिलचस्पी के आधार पर इन विषयों में अपनी विशेषज्ञता बनानी चाहिए। यह भी ध्यान रखने वाली बात है कि आपकी दिलचस्पी तीनों ही वर्गों में समान रूप से नहीं हो सकती। संभव है कि किसी की दिलचस्पी किशोर वर्ग के लिए लेखन में हो, बुजुर्गों में नहीं; या फिर किसी को युवाओं के बारे में लिखना अच्छा लगता हो, किशोरों के बारे में उसकी कोई खास अवधारणा न हो। इसलिए यह बेहतर होगा कि अपनी दिलचस्पी को देखते हुए खास वर्ग के बारे में पर्याप्त जानकारी इकट्ठी की जाए। किशोरों और बुजुर्गों के बारे में जहां हमें लिखित सामग्री और शोध कार्य भी उपलब्ध हो सकता है, वहीं युवाओं के बारे में कई बार हमें ज्यादा प्रामाणिकता के लिए खुद के अवलोकन का भी सहारा लेना पड़ सकता है, क्योंकि युवाओं में तेजी से परिवर्तन देखने को मिलता है।

14.8.2 लेखन का उद्देश्य और प्रासंगिकता

लेखन का उद्देश्य उसकी प्रकृति को भी तय करता है। इन विशिष्ट वर्गों पर लेखन का आशय ही समाज के उस पहलू की तरफ पाठक का ध्यान आकृष्ट करना है, जो आमतौर पर मुख्यधारा की चर्चा का विषय नहीं होता है, अगर चर्चा होती भी है तो बहुत औपचारिक ढंग से और महज खानापूर्ति के लिए हमें इन तीनों वर्गों के अपने समय और समाज में आने वाले बदलावों से जोड़कर देखना होगा। यदि हम किशोरों के बारे में कुछ लिखना चाहते हैं तो उनकी सामाजिक–शैक्षिक गतिविधियों, उनके बीच पनपने वाले अपराध, उनकी सोच और व्यवहार में आ रहे बदलाव, नई टेक्नोलॉजी का उनके जीवन पर प्रभाव आदि को फीचर का विषय बना सकते हैं। इसी तरह बुजुर्गों के लिए लिखते वक्त हम उनके अकेलेपन, उनकी टूटन, उनके स्वास्थ्य समस्याओं को फोकस में रख सकते हैं।

14.8.3 प्रकाशन की प्रकृति

यह भी ध्यान में रखना होगा कि हम जिस समाचार पत्र या पत्रिका के लिए लिखना चाहते हैं, उसकी प्रकृति क्या है। इन दिनों बहुत–सी पत्रिकाएं किशोरों और युवाओं को ध्यान में रख कर विशेष फीचर पृष्ठ निकाल रही हैं। उनका लक्ष्य किशोर पाठकों के बीच पत्र को लोकप्रिय बनाना होता है। ऐसे फीचर पेज की भाषा–शैली और विषय थोड़ा भिन्न होंगे। इन्हीं के बारे में गंभीर प्रकृति की पत्र–पत्रिकाओं में लिखते वक्त प्रस्तुति का अंदाज और विषय का चयन थोड़ा अलग होगा। उदाहरण के तौर पर हम 'अमर उजाला' में छपने वाले फीचर सप्लीमेंट 'टीन वर्ल्ड' में छपे आलेखों के शीर्षक देखें तो बात और स्पष्ट हो जाएगी –

हम तो हैं जरा हट के...(कवर स्टोरी, पाठकों से पूछे सवालों के आधार पर सर्वे)

जब पढ़ो, सब पढ़ो (पढ़ाई के लिए टिप्स देने वाला आलेख)

टीचर फ्रेंड या फ्रेंडली टीचर्स (शिक्षक और छात्र के बीच के रिश्तों पर)

आत्मविश्वास, रहे हमेशा साथ (व्यक्तित्व विकास पर)

नई जींस, पुरानी सलवार (फैशन टिप्स)

बनो फिट एंड फाइन (खेलकूद पर)

वेलकम फ्रेशर्स, पार्टी इज ऑन (कॉलेज लाइफ)

(सभी आलेख अमर उजाला, 10 सितंबर 2005 के 'टीन वर्ल्ड' से)

उपर्युक्त शीर्षकों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये सभी आलेख खासतौर पर किशोर वर्ग के पाठकों की दिलचस्पी को ध्यान में रखते हुए तैयार किए गए हैं। इस तरह के आलेख लिखने के लिए आपको इन वर्गों की जीवन शैली और गतिविधियों को करीब से समझना होगा। युवाओं और बुजुर्गों के लिए लेखन करते वक्त भी इस बात का ध्यान रखना होगा कि आप किस प्रकृति की पत्रिका के लिए लिख रहे हैं। गौर करें कि 'दैनिक भास्कर' और नवभारत जैसे कुछ हिन्दी के समाचार पत्रों ने तो बुजुर्गों को ध्यान में रखते हुए उनके लिए पठनीय सामग्री निकालनी शुरू की है।

14.9 सामग्री का संकलन

इन वर्गों के लिए लिखते वक्त हमें हर बार भिन्न–भिन्न स्रोतों से सामग्री जुटानी होगी। सामग्री के स्रोत न सिर्फ किशोरों, युवाओं और बुजुर्गों को ध्यान में रखते हुए अलग होंगे, बल्कि इनमें भी लेख की प्रकृति, विषय के चयन और उसके प्रस्तुतिकरण को देखते हुए भिन्न होंगे। इस तरह देखें तो बहुत कुछ सामग्री के संकलन पर ही एक अच्छे फीचर का लिखा जा सकना संभव है। आइए, आगे हम इस पर थोड़ा और विस्तार से विचार करते हैं।

14.9.1 विषय पर शोध

किसी भी विषय पर लिखते समय उसकी शोधपरक जानकारी आवश्यक है। इसके अभाव में फीचर बेदम हो जाएगा। अखबारों में प्रकाशित होने वाले फीचर हजारों लोगों के लिए सूचना का स्रोत होते हैं, लिहाजा हमारी जिम्मेदारी बन जाती है कि हम फीचर में सटीक और प्रमाणिक जानकारी दें। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम जो भी विषय चुनें उसके बारे में पर्याप्त शोध के बाद ही लिखना आरंभ करें। उदाहरण के लिए, हम महानगरों में अकेले रहने वाले बुजुर्गों पर कुछ लिखना चाहते हैं तो इस बारे में पहले से उपलब्ध कोई शोध सामग्री या आलेख जुटाने का प्रयास करना चाहिए। इसी तरह, यदि हम गरीबी के कारण पढ़ाई बीच में छोड़ने वाले किशोरों पर लिखना चाहते हैं तो इस बारे में किसी स्वयंसेवी संगठन की रिपोर्ट और उपलब्ध सरकारी आकड़ों के अलावा स्थिति का वास्तविक आकलन करने का प्रयास करना चाहिए।

14.9.2 तथ्यों का संकलन

फीचर लिखते समय विषय से जुड़े तथ्यों का संकलन बेहद जरूरी है। इनकी मदद से फीचर प्रभावशाली बनता है। उदाहरण के लिए, किशोरों के ताजा रुझान को लेकर 'अमर उजाला' के 10 सिंतबर 2005 के अंक में प्रकाशित फीचर 'हम तो हैं जरा हट के.....' में ग्राफ की मदद से बताया गया है कि कॉलेज में किशोर वर्ग के लोग अपने दोस्तों से किस तरह की बातें करते हैं। इसके मुताबिक, 22 प्रतिशत किशोर

लड़के–लड़कियों के बारे में चर्चा करते हैं, 45 प्रतिशत पढ़ाई की चर्चा करते हैं, 25 प्रतिशत की बातचीत का विषय फिल्में होती हैं तो सिर्फ आठ प्रतिशत की दिलचस्पी राजनीति में होती है।

14.9.3 साक्षात्कार

यदि किसी विषय पर पहले बहुत ज्यादा शोध नहीं हुआ या आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं तो ऐसी स्थिति में फीचर लेखक को केस स्टडी का सहारा लेना चाहिए। समस्या से प्रभावित बुजुर्गों से सीधा साक्षात्कार, उनकी समस्या का वास्तविक चित्रण, इन मुद्दों पर समाजशास्त्रियों और समाज के विभिन्न वर्गों की राय को मिलाकर एक अच्छा फीचर तैयार किया जा सकता है। साथ ही साक्षात्कार फीचर को ज्यादा दिलचस्प भी बनाते हैं।

14.9.4 फोटो और अन्य सामग्री

बदलते दौर की पत्रकारिता में फोटो और अन्य सामग्री फीचर को अखबार या पत्रिका के पन्नों पर ज्यादा आकर्षक बनाते हैं, लिहाजा इनकी मांग भी तेजी से बढ़ती जा रही है। अब संपादक किसी खास विषय को छोटे–छोटे, ग्राफ आंकड़ों और तस्वीरों के एक 'पैकेज' के तौर पर प्रस्तुत करना चाहते हैं। इसलिए फीचर तैयार करते समय ही इस बात की गुंजाइश बना लेनी चाहिए कि आलेख को कैसे फोटोग्राफ, कैरीकेचर, स्केच, ग्राफ आदि की मदद से सजाया जा सकता है। हम पत्रिका की मांग के मुताबिक अपने फीचर को ही कई हिस्सों में तोड़कर कुछ इनसेट बाक्स तैयार कर सकते हैं। कुछ रोचक तथ्यों को ग्राफ की मदद से प्रस्तुत किया जा सकता है। युवाओं और किशोरों के लिए लिखते वक्त तो इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए।

14.10 सामग्री का संयोजन और संपादन

फीचर लिखने की कला इस बात पर निर्भर करती है कि आपने उपलब्ध सामग्री का किस तरह से इस्तेमाल किया है। विषय से संबंधित तथ्यों को इकट्ठा करने के बाद उनका चयन और फीचर में सटीक इस्तेमाल ही हमारे लेखन को आकर्षक बनाता है। यह आवश्यक नहीं है कि आपने जितनी जानकारी हासिल की है, वह सारी की सारी फीचर में इस्तेमाल कर डाली जाए। ऐसा करने से फीचर बोझिल और ऊबाऊ हो जाएगा। इसलिए उसका इस्तेमाल बात को वजनदार बनाने के साथ–साथ आकर्षक प्रस्तुति के लिए भी किया जा सकता है। देखें, उदाहरण–

''राहुल क्रिकेट का दीवाना था। पढ़ाई के अलावा उसका पूरा समय क्रिकेट पिच पर ही बीतता था। उस पर क्रिकेट का इतना जुनून सवार था कि गर्मी हो या सर्दी, शाम के चार बजे नहीं कि वह साइकिल पर बैट लगाकर ग्राउंड की ओर भागा। सभी उसे डांटते, कहते कि क्रिकेट से कैरियर नहीं बनता है, लेकिन आज स्पोर्ट्स कोटे से मिली सरकारी नौकरी ने सबकी बोलती बंद कर दी है।''

बी स्पोर्टी, विद स्पोर्टस (अभिषेक मेहरोत्रा, अमर उजाला, 10 सितंबर 2005)

14.11 फीचर लेखन

अब तक आप विषय की गंभीरता और गहराई को भली–भांति समझ गए होंगे। आप यह भी जान गए होंगे कि किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग पर लेखन के लिए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और कैसे उन पर लिखने के लिए विषय का चयन किया जा सकता है। आइए, अब फीचर लेखन की शुरुआत करते हैं। यहां हम फीचर के शैलीगत ढांचे और उसकी भाषा से जुड़े कुछ बुनियादी मुद्दों पर चर्चा करेंगे।

14.11.1 आरंभ

फीचर का आरंभ दिलचस्प होना चाहिए। इसकी शुरुआत ऐसी होनी चाहिए कि पाठकों के सामने फीचर की विषय वस्तु न सिर्फ स्पष्ट हो जाए, बल्कि उनमें आगे पढ़ने की उत्सुकता बनी रहे। आमतौर पर किसी प्रसंग, घटना, ब्यौरे या साक्षात्कार के माध्यम से फीचर की शुरुआत करना उसे जीवंत बनाता है। इससे पाठकों के मन में न सिर्फ फीचर के प्रति, बल्कि मूल विषय के प्रति भी उत्सुकता का संचार होता है। एक उदाहरण देखें –

''यहां के हम सिकंदर, चाहें तो रख लें सबको अपनी जेब के अंदर, कॉलेज में कदम रखा नहीं कि दिमाग के अंदर यही धुन गूंजने लगती है और धुन का असर दिखाई देता है तुम्हारे डेली रूटीन और बिहेवियर पर। सुबह जब तक कोई चादर न खींच ले, बिस्तर नहीं छूटेगा। दोस्त ने बर्थ–डे पार्टी पर बुलाया है, रात में जाना है। घर में किसी ने मना किया, तो बस हंगामा...बड़े हो गए हैं, अपना अच्छा–बुरा समझ सकते हैं, वगैरह, वगैरह। कॉलेज में फ्री पीरियड है, तो चल दिए किसी रेस्ट्रां में, लाइब्रेरी में तो मग्गू जाते हैं और आप तो...।।''

ड्रॉ योर लाइन्स (रिंकी, अमर उजाला 10 सितंबर 2005)

यदि उपर्युक्त बातों को सपाट तरीके से उपदेशात्मक लहजे में लिख दिया जाता तो शायद ही किसी को दिलचस्पी इसे पढ़ने में होती। चूंकि यह फीचर खासतौर पर किशोरों और युवाओं को ध्यान में रखकर लिखा गया है, इसलिए इसकी भाषा और शुरुआत करने का तरीका भी अलग किस्म का है। शैली जानबूझकर अनौपचारिक रखी गई है और बात को युवाओं में सामान्य पाई जाने वाली गतिविधियों से जोड़कर कहने का प्रयास किया गया है।

14.11.2 मध्य

फीचर का मध्य भाग सबसे महत्वपूर्ण होता है। बहुत दिलचस्प शुरुआत के बावजूद यदि हम इस मध्य भाग को बेहतर नहीं बना सके तो पूरे फीचर का संतुलन बिगड़ जाएगा और वह बेदम हो जाएगा। अतः इस हिस्से को तैयार करने में हमें काफी मेहनत करनी चाहिए। आमतौर पर विषय से संबंधित सभी बातों पर विस्तार से चर्चा मध्य भाग में ही होती है। मुख्य विषय पर गंभीरता से चर्चा भी फीचर के इसी हिस्से में होती है। इसके लिए तथ्यों का बेहतर प्रस्तुतिकरण, बातचीत, साक्षात्कार, आंकड़ों आदि का भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए। एक उदाहरण और देखें –

''कलक्टर, कप्तान या मुंसिफ होना उनके लिए बहुत दूर का सपना है। इस सपने की बात छोड़िए, उसका पीछा करने में ही बड़ा थ्रिल है। वे इसी रोमांच में जीते हैं, बाग के रूमानी झुरमुटों में किताबों के साथ होना भी उनके लिए बड़ी चीज है। वे सस्ते

किराये की जिन कोठरियों में रहते हैं, पकाते हैं, वहां हवा और रोशनी के आने की मनाही है। वहां काइयां और लोलुप मकान मालिकों की पाबंदियां और नखरे, चालीस वाट से ज्यादा पॉवर का बल्ब जलाने पर कोई बल्ब फोड़ देता है तो कोई पाखाने में ताला लगाकर सोता है। ये लड़के किरोसिन तेल की तलाश में जेब में परिचय–पत्र और हाथ में कनस्तर लिए लाइनों में लगते हैं। खर्च चलाने के लिए ट्यूशन पढ़ाते हैं। सेकेंड हैंड किताबों और किलो के भाव से बिकने वाली कापियां तलाशते हैं। शहर की इन अंधेरी कोठरियों और क्लास में टिके रहने की जद्दोजेहद इनमें से कइयों को इतना थका डालती है कि उनकी पसलियों पर कमीजें लटकती मिलती हैं।''

कंपनी बाग में देसी फूल (अनिल यादव, अमर उजाला, 17 अगस्त 2004)

यहां गौर करें कि उपर्युक्त उद्धरण में लेखक किस तरह अपनी बात को विस्तार दे रहा है। इससे पाठकों को विषय के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाने का 'स्पेस' तैयार होता है। इस उदाहरण में गांव–देहात से आने वाले नौजवानों के रोजमर्रा के जीवन की दिक्कतों को इस तरह सामने रखा गया है कि ये सिर्फ उनकी दिक्कतें भर नहीं रह जातीं, बल्कि यह उनके पूरे जीवन संघर्ष को सामने रख देता है।

14.11.3 अंत और शीर्षक

फीचर को समाप्त करने में एक खास तरह का कौशल होना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए कि फीचर का अंत चुस्त हो और अब तक कही बात को समेटने का प्रयास हो। यदि अंत में किसी किस्म का बिखराव या अस्पष्टता दिखी तो मेहनत बेकार हो जाएगी। पीछे कही बातों का भी पाठक पर प्रभाव नहीं पड़ेगा और फीचर बेअसर हो जाएगा। इसी तरह, शीर्षक भी बहुत सपाट किस्म के नहीं होने चाहिए। शीर्षक संक्षिप्त और आकर्षक होने चाहिए। ध्यान देने वाली बात यह है कि नई पीढ़ी के लिए लिखते वक्त उनके बीच प्रचलित नए मुहावरों का हमें विशेष खयाल रखना चाहिए। इनका इस्तेमाल करने से शीर्षक ज्यादा आकर्षक बनते हैं। किशोरों तथा युवाओं के लिए फीचर लिखते वक्त तो इस बात का खास ध्यान देना होगा कि उसकी शैली पाठकों के मूड से मेल खाती हो। उदाहरण देखें –

''कॉलेज का एक साल कैसे गुजर जाएगा, पता ही नहीं चलेगा। सीनियर बनते ही रैगिंग के प्रति दृष्टिकोण भी बदल जाएगा। आप इस बात पर यकीन करने लगेंगे कि थोड़ी बहुत रैगिंग सबकी होनी चाहिए क्योंकि तब तक रैगिंग के फायदे आपकी समझ में भी आने लगेंगे। खासतौर पर सपनों के आकाश से वापस धरती पर रैगिंग की बदौलत मिली पटखनी से महसूस हो जाएगा कि 'बच्चू, अब तू बड़ा हो गया है।''

बच्चू, अब तू बड़ा हो गया है (प्रतिमा पांडेय, अमर उजाला, 3 जुलाई 2004)

14.12 भाषा–शैली

किशोरों के लिए लिखते वक्त भाषा के प्रति खासतौर पर सजगता बरतना जरूरी है। हमें उनके बीच प्रचलित शब्दावली और मुहावरों का ध्यान रखना होगा। नई पीढ़ी तक घिसी–पिटी भाषा के जरिए नहीं पहुंचा जा सकता। यदि हमारा फीचर गंभीर मुद्दे पर विमर्श कर रहा है तो भाषा की प्रकृति भी गंभीर हो सकती है, पर उसमें प्रवाह और सहजता अवश्य होनी चाहिए। उदाहरण देखें –

''किताबों के इर्द–गिर्द उन्हें देखकर यह नतीजा निकालना कतई गलत होगा कि ये लड़के बहुत मेधावी हैं और उन सबमें ज्ञान की अदम्य पिपासा है। इनमें से ज्यादातर के लिए शिक्षा हंसिए जैसा कोई औजार है, जिससे वे अपने भविष्य के रास्ते में उगेझाड़–झंखाड़ की निराई करते हैं। अगर उनकी मेधा जाननी है तो उन्हें लार्ड मैकाले के नहीं, किसी और पैमाने पर जांचिए। आप इनमें से किसी को अंग्रेजी में सोशियोलॉजी लिखने को कहें और वह सुशीला जी लिख दे तो हंसिए मत, वे आपको आधुनिक वर्णाश्रम और जातिवाद की सामाजिक इंजीनियरी कई दिन तक लगातार पढ़ा सकते हैं क्योंकि इसे उन्होंने पढ़ा और सुना नहीं, भोगा और जिया है।''

कंपनी बाग के देसी फूल (अनिल यादव, अमर उजाला, 17 अगस्त 2000)

पिछले कुछ सालों में अखबारों ने भाषा के बदलाव पर खास ध्यान दिया है। इसकी एक बड़ी वजह टेलीविजन के जरिए लोगों तक पहुंची हिंदी–अंग्रेजी की मिश्रित भाषा है, जिसे आम बोलचाल में 'हिंगलिश' भी कहते हैं। लिहाजा फीचर के लिए हमें विषयानुकूल भाषा गढ़नी होगी। यदि हम किशोरों और युवाओं के रोजमर्रा के जीवन को अपने फीचर का विषय बना रहे हैं तो हमें वैसी ही भाषा भी इस्तेमाल करनी चाहिए। एक उदाहरण देखें –

''वैसे तो रैगिंग से पहले भी कई ऐसे मौके आते हैं, जिनमें हमें अपना गुस्सा काबू करने का सबक मिल ही जाता है। लेकिन फिर भी बड़े भाई, पापा या मम्मी की सरपरस्ती के कारण हम थोड़ा तुनकमिजाज होते ही हैं। ऐसे में रैगिंग सारे कस–बल निकाल देती है। तब समझ में आता है कि क्यों घर के बड़े कुछ मामलों में शांत रहकर व्यवहार करते हैं और हमें बेवजह भुजाएं फड़काने को मना करते रहते हैं। सीधे शब्दों में कहें तो नए ऊंटों को पहाड़ों के नीचे आने का अनुभव हो जाता है। इसलिए सब सीधी राह भी चलने लगते हैं, क्योंकि जरा–सी चूं–चपड़ की नहीं कि सीनियर्स मिट्टी पलीद करने में देर नहीं लगाएंगे। एक दिन की जबरदस्त खिंचाई के बाद जब दूसरे दिन कॉलेज पहुंचते ही कोई सीनियर आपको नाम से बुलाए और साथ ही जूनियर इस पर आपको मुड़कर देखें, तो मन में जरूर आता है कि वाह, मैं तो फेमस हो गया। ऐसी छोटी–छोटी घटनाएं बहुत आत्मविश्वास देती हैं।''

बच्चू, अब तू बड़ा हो गया है (प्रतिमा पांडेय, अमर उजाला, 3 जुलाई 2004)

बोध प्रश्न –2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) सामग्री संकलन में तथ्यों के संकलन का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) युवाओं से सम्बन्धित किसी फीचर का अंत किस प्रकार किया जाना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

14.13 सारांश

- इस इकाई में हमने देखा कि कैसे उदारीकरण के बाद वाले दौर में किशोर, युवाओं और बुजुर्गों की सामाजिक स्थिति और उनकी भूमिका में बदलाव आया है। हमने इसके कारणों को समझते हुए यह जानने का प्रयास किया कि मौजूदा पत्रकारिता किस तरह इन वर्गों पर फोकस कर रही है और उनमें फीचर लेखन की क्या संभावनाएं हैं।

- हमने तीनों वर्गों की सामाजिक स्थितियों का अलग–अलग विश्लेषण किया और उन पर लिखे जाने वाले फीचर के विषय क्षेत्र पर विस्तार से विमर्श किया। हमने यह समझने का प्रयास किया कि आज के युवा, किशोर और बुजुर्ग किस तरह की समस्याओं से दो–चार हो रहे हैं। साथ ही इन वर्गों से जुड़े कौन से प्रमुख मुद्दे हैं, जिन पर फीचर तैयार किया जा सकता है।

- इस इकाई में हमने किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए लिखे जाने वाले फीचर का विषय चुनने से लेकर इन पर लिखे जाने वाले फीचरों के उद्देश्य और प्रासंगिकता, सामग्री के संकलन की विधि, सामग्री के संयोजन और संपादन के तरीके तथा भाषा–शैली पर विस्तार से विचार किया। हमने यह समझा कि इस तरह के फीचर का पूरा कलेवर किस तरह से तैयार किया जा सकता है, जिससे हमें किशोरों, युवाओं और बुजुर्गों के बारे में फीचर लिखने में आसानी हो सके।

अभ्यास

1) यदि आपको किशोरों के बीच इंटरनेट पर होने वाली मित्रता पर एक फीचर तैयार करना है तो उसकी भाषा–शैली में किन बातों का ध्यान रखेंगे? कारण सहित अपनी बात को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) बढ़ते अकेलेपन और एकल होते परिवारों को देखते हुए बुजुर्गों ने भी अपनी जीवन–शैली बदली है। इस विषय पर आपको एक फीचर तैयार करना है। इस सिलसिले में आप किस तरह से सामग्री का संकलन और संयोजन करेंगे? संक्षेप में बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

3) आपराधिक गतिविधियों के प्रति युवाओं के झुकाव पर फीचर तैयार करने के लिए आपको किस तरह के तथ्यों और आंकड़ों की जरूरत पड़ेगी? संक्षेप में बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

14.14 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. देखिए, उपभाग 14.5.2 उदाहरण स्वयं तैयार कीजिए।
2) देखिए, उपभाग 14.5.3 उदाहरण स्वयं भी विचार कीजिए।
3) इकाई में व्यक्त विचारों के आलोक में टिप्पणी तैयार कीजिए।

बोध प्रश्न– 2

1) इसका महत्व सर्वाधिक होता है। देखिए, उपभाग 14.9.2
2) देखिए, उपभाग 14.11.3

अभ्यास के लिए दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखिए।